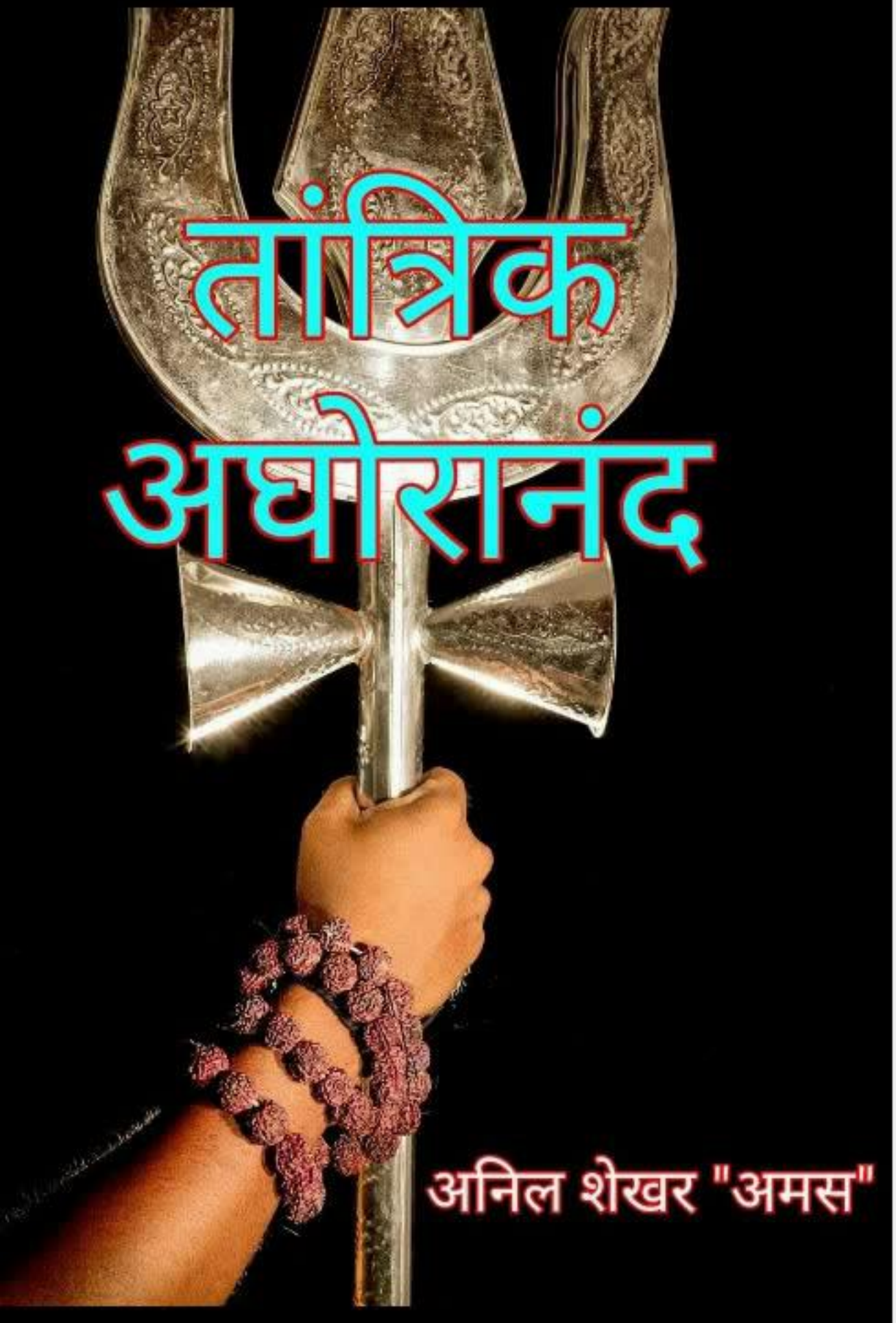
तांत्रिक
अघोरानंद
अनिल शेखर "अमस"

भूमिका

|| श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः ||

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं और उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है,उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है , इसलिए इसके किसी भाग का

अनुकरण करने की कोशिश न करें क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

साधनाओं का क्षेत्र गुरु गम्य माना गया है इसलिए इस क्षेत्र में कुशल गुरु के मार्गदर्शन में ही उतरें , अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है |

अंत में .....यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

तांत्रिक अघोरानंद

अंधेरी रात का वक़्त !

मसान घाट में दो चिताएं चल रही है !

लकड़ी के जलने की आवाज के बीच में मांस के चटचटाने की आवाज !

सांय सांय कर रहे मसान का पूरा इलाका जलते हुए मांस की बदबू से भरा हुआ था .....

दारु की बोतल को हलक में गड़ा कर डोम नदी के किनारे सोया हुआ था | उसे मालूम था कि अब सारी रात उसका कोई काम नहीं है |

फिर सुबह होगी !

फिर लाशें रह जाएंगी !

फिर वही काम !

सारी दुनिया से बेखबर अप्रिय से लगने वाले लेकिन हर एक की अंतिम यात्रा के लिए सहायक कार्य को करने की व्यवस्था का काम !

यहां उस कार्य को करते हुए पैदा हुई निर्लिप्तता कहें या वैराग्य ! उसे जैसे सारी दुनिया से कोई लेना-देना नहीं था | कोई नहीं जानता था कि वह कहां से आया है ? कोई नहीं जानता था कि वह किस गांव का रहने वाला है ? कोई भी नहीं जानता कि कब से वह श्मशान भूमि में डटा हुआ है | उम्र साठ के ऊपर और बलिष्ठ देह का स्वामी "बाबा", हाँ सभी उसे बाबा ही कहते थे ! श्मशान में पिछले तीन चार दशकों से विराजमान था | वहां के चप्पे-चप्पे से वाकिफ था | हर लाश के साथ उसकी दारु की व्यवस्था भी रहती थी | नित्यप्रति उसका कोटा पूरा होता और वो तान कर जमीन पर कहीं भी सो जाता | पथरीली जमीन भी उसे बिस्तर जैसी ही लगती थी और इतने सालों की आदत और श्मशान भूमि की मूलभूत प्रवृत्ति ने उसे भी पत्थर बना दिया था | सुबह जब तक सूरज की रोशनी इतनी तेज नहीं हो जाती कि उठने की मजबूरी आ न पड़े वह आराम से पड़ा

रहता, और क्योंकि सब उसकी आदत जानते थे कोई उसे परेशान भी नहीं करता था |

ऐसे ही दिन गुजर रहे थे, और बाबा की जिंदगी भी खामोशी से आगे बढ़ती जा रही थी | ! मैंने 16 वर्ष की उम्र में अपने गुरु अखिलेश्वरानन्द जी से दीक्षा प्राप्त की थी | नदी के किनारे एक पुराना काली मंदिर था, जिस में प्राचीन शिवलिंग स्थापित था | वह मेरा प्रिय स्थान था ! मेरी साधना का सबसे महत्वपूर्ण कालखंड ! जब मैं साधना का ककहरा पढ़ रहा था उस समय मेरा अधिकांश समय वहीँ गुजरता था | मैं अपने क्षमता के अनुसार धीरे धीरे साधना के पथ पर आगे बढ़ रहा था और कोशिश करता था कि जब भी संभव हो गुरु के पास कुछ समय बैठकर उनसे ज्ञान ले सकूँ | लेकिन ऐसा अवसर साल में एक दो बार ही मिल पाता था | ग्रहस्थ जीवन में रहते हुए थोड़ी बहुत साधना तो हो जाती थी लेकिन वह इतनी पर्याप्त नहीं थी जिसे साधनात्मक रूप से सफलता के लिए आवश्यक समझा जा सके | शायद गुरुवर भी मेरी दशा को समझ रहे थे और उन्होंने मुझे कभी भी किसी निर्धारित संख्या में मंत्र

जाप के लिए नहीं कहा | वह बस इतना कहते थे कि जितनी तेरी शक्ति है उतनी ही कर ले | इतना सुनकर मैं जान बची तो लाखों पाए ऐसा सोचकर वहां से वापस आ जाता था |

मै अपनी इच्छा और क्षमता के अनुसार काम करता , मेरी जिंदगी ऐसे ही बेहद शांतिपूर्ण ढंग से चल रही थी | मेरी शादी इक्कीस साल में हो गयी थी |सरकारी नौकरी से इतनी आमदनी हो जाती थी कि आराम से मेरा और मेरी पत्नी का खर्चा चल जाता था | नई-नई शादी थी ! यौवन की मांग भी और साथ ही वासना की प्रचंडता भी ! पत्नी माला अद्भुत देहयष्टि की स्वामिनी थी | उसका हर अंग सांचे में ढला हुआ था था ! उसके उन्नत वक्ष आमंत्रण देते हुए प्रतीत होते थे और कब मैं उसमें समा जाता था और अपने आप को खो देता था , यह हमें कभी समझ नहीं आया | इसी प्रणय के बीच हमारा समय व्यतीत होता गया |

विवाह के लगभग 5 वर्ष के बाद भी माला गर्भवती नहीं हो पाई और लोगों ने ताना मारना शुरू कर दिया | इसके साथ हमारे यौन जीवन में भी धीरे-धीरे इस निराशा ने

घर करना चालू कर दिया | लगातार इलाज के बाद भी कोई विशेष लाभ नहीं हुआ | सभी तरह की जांच में कोई कमी दिखाई नहीं देती थी | माला की माहवारी भी नियमित थी और मेरे शुक्राणुओं की संख्या भी पर्याप्त थी | लेकिन बात कुछ आगे नहीं बढ़ पा रही ऐसे ही धीरे-धीरे वक्त गुजरता जा रहा था |

हमारे जीवन में अब निराशा भी घर करने लगी थी ! माला मुझसे ज्यादा दुखी रहती, मैं उसे समझाने की कोशिश करता ! लेकिन कभी-कभी खुद भी उदास हो जाता | जब विषाद और निराशा धीरे धीरे मानव को अंदर से काटना चालू करें तो वह धीरे धीरे गलता जाता है | अंदर ही अंदर बढती पीड़ा से उसकी काली आँखों के नीचे कालिमा छाने लगी | कमजोरी उसपर हावी होने लगी और एक दिन उसने बिस्तर पकड़ लिया | बड़े बड़े डॉक्टरों से इलाज कराया मगर हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गयी | देह का रोग कोई पकड़ नहीं पा रहा था और मन का रोग लाइलाज होता चला गया |

सावन का महीना चल रहा था और अमावस्या का दिन था | मैं सुबह हाथ मुह धोकर बरामदे तक आया और

सामने जो दृश्य दिखा उसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी | मैंने देखा एक नागा साधु जो लगभग 6 फुट का था और हट्टे-कट्टे मजबूत बदन का मालिक है वह सामने खड़ा है | उसकी आंखों से तेज प्रवाहित हो रहा था | मैं आगे बढा और उस दिव्य साधू के सादर चरण स्पर्श किए |

साधु ने आशीर्वाद दिया और पूछा - " भोग पूरा हो क्या ? पूरा हो गया हो तो अब योग की ओर चलें ?

मेरी समझ में कोई बात नहीं आई लेकिन न जाने किस भावना के वशीभूत मेरा सिर हां की सहमति में हिलाया |

बाबा ने हल्की हंसी के साथ मेरे सर पर हाथ फिराया और कहा - "ठीक है ! यहां से तेरी यात्रा शुरू होगी ! विचलित मत होना ! बहुत ज्यादा उम्र बहू की नहीं बची है ! नियति को स्वीकार कर और अपने निर्धारित मार्ग पर आगे चल !"

इतना कह बाबा तेजी से एक और निकल गए .....

माला की लंबी बीमारी ने मुझे मानसिक रुप से शायद आघात के लिए तैयार कर दिया था | मैं भी यह स्वीकार करने की स्थिति में आ गया था कि अब माला और मेरा साथ बहुत लंबा नहीं | साधु बाबा की बात ने मेरे इस विचार पर मोहर लगा दी | मैंने जितना हो सका सेवा की लेकिन माला की हालत दिन-ब-दिन बिगड़ती चली गई और जन्माष्टमी की रात को उसने अपनी देह छोड़ दी.....

मैं अकेला रह गया दुख के बादल में से मेरे ऊपर फट पड़े ! मैं अपनी प्यारी माला को खो चुका था ! उसके साथ बिताए खूबसूरत पल मेरे जहन में तैरते रहते !

मैं पागलों की तरह रात रात भर
जागता.....

उस आनंद की तलाश करता जो मैंने उसके साथ महसूस किया था !

लेकिन अब तो वह सब खत्म हो चुका था | इसी उहापोह में चलते चलते दीपावली भी आ गई |

दीपावली की रात मैं बाहर गलियारे में चारपाई पर सोया हुआ था | पटाखों की धुआंधार आवाजों का समय गुजर चुका था | धीरे धीरे उनकी आवाज मध्यम होते होते समाप्त होने के कगार पर आ चुकी थी | मैं भी सोने की कोशिश करता हुआ पुराने दिनों को याद कर रहा था | या यूं कहिए की रातों को याद कर रहा था | हल्की नींद का झोंका मेरी आंखों में समाने लगा था.....

तभी ! अचानक ! ऐसा लगा जैसे चारपाई के पास कोई बम फूट गया हो ! मैं हड़बड़ा कर उठ बैठा !

नीले रंग की रोशनी का एक गोला मेरी चारपाई के पास नजर आया, जिसमें लगभग 1 फुट की मानव आकृति दिखाई दे रही थी | इस प्रकार की कोई चीज मैंने वास्तविक जीवन में नहीं देखी थी तांत्रिक कथाओं और मनोहर कहानियां जैसे काल्पनिक ग्रंथों में अवश्य पढा था , जिनमें कई रहस्यमय घटनाओं का जिक्र होता था |

अनहोनी घटना की आशंका से मेरा दिल घबराया !

मन ही मन मैंने गुरु मंत्र का जाप प्रारंभ कर दिया क्योंकि मैं जानता था कि हर मुसीबत की स्थिति में मेरे गुरु के द्वारा दिया गया मंत्र हमेशा सहायक बन कर रास्ता दिखाता ही था | मंत्र का जाप करते ही साथ अंदर की घबराहट थोड़ी कम हुई .....

नीले रंग की रोशनी के अंदर की वह मानव आकृति धीरे धीरे थोड़ी स्पष्ट हुई वह एक स्त्री की आकृति थी | मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम की मुद्रा में अपना सिर झुकाया क्योंकि उस रोशनी का स्वरूप तथा सानिध्य बेहद सात्विक लग रहा था | मेरे प्रणाम के उत्तर में उस आकृति का हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा .....

कुछ ही क्षणों में वह आकृति धीरे धीरे बडी हुई और मुझे अपने घेरे में ले लिया , प्रकाश का नीला वर्ण जैसे ही मेरे चारों तरफ फैला मैं एक अजीब सी शांति और समाधि जैसी अवस्था में चला गया . उसके बाद क्या हुआ मुझे कुछ पता नहीं चला |

जब मेरी आंखें खुली तो सूरज की किरणे सूर्य उदय का संकेत दे रही थी । मैंने अपने चारों तरफ देखा तो कुछ

समझ नहीं आया की चारपाई से मैं यह कहां आ गया हूं । तभी मुझे एक परिचित आकृति दिखाई दी । मैंने आंखें मसली और ध्यान से देखने की कोशिश की, अरे, यह तो श्मशान घाट का डोम बाबा है ।

मतलब ! मैं श्मशान घाट में पडा था ?

वो मेरे पास आया !

उसकी आंखों में आज एक अलग सी चमक थी !

यह चमक बेहद प्रभावशाली थी ।

शायद बाकी दिनों में मैंने उसे इतने ध्यान से नहीं देखा था । ऐसा लग रहा था जैसे दो चमकते सितारे उसकी आंखों में समा गये हों ! उसने मुझे पकड़कर उठाया, हाथ में रखी हुई बोतल मेरी तरफ बढ़ा दी । इतनी प्यास लग रही थी कि मैंने यह भी नहीं सोचा कि वह पानी थी कि दारू , और मुंह लगाकर गटागट पी गया । बड़ा अजीब सा स्वाद था पानी का, कुछ कुछ दारू के जैसा । पीने के बाद मुझे चक्कर आने लगा । ऐसा लगा जैसे आकाश पाताल दोनो घूम रहे हो.....

आधी बेहोशी की हालत में मैंने देखा की बाबा ने मुझे उठा लिया और मसान घाट के दूसरे छोर पर बनी अपनी झोपड़ी में ले जाकर सुला दिया । उसके बाद शायद वह अपने काम में चला गया और मैं फिर बेहोशी की अवस्था में .....

जब फिर आंख खुली ! तो चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था । झोपड़ी के किनारे पर काला कंबल बिछा हुआ था , जो देखने में आसन जैसा लग रहा था । आसन पूरा खाली था |

उठने की कोशिश की , लेकिन अभी सर चकरा रहा था । पास में बोतल रखी हुई थी, लेकिन सुबह का चक्कर याद करके, उसमें से पानी पीने की हिम्मत नहीं हो रही थी । इसलिए धीरे धीरे बाहर निकला.....

चारों तरफ अंधेरा पसरा हुआ था.....

दूर एक चिता जल रही थी.....

मैं धीरे धीरे नदी की ओर बढा.....

नदी के पाट पर बैठकर हाथ धोया, और कुछ छींटे आंखों पर मारे । चेतना वापस लौट के आई । भूख नहीं लग रही थी मगर प्यास इतनी जबर्दस्त कि ऐसा लगा जैसे एकाध लीटर पानी तो पी ही जाऊंगा । भर पेट पानी पीया |
पानी पीने के बाद दिमाग में थोड़ा काम करना चालू किया और ध्यान आया कि यह हो क्या रहा है ?

इस सवाल का जवाब जानने के लिए मुझे डोम की झोपड़ी सबसे उचित जगह लगी .....

मसान घाट पूरी तरह से खाली था .....

दूर-दूर तक इंसान का नामोनिशान नहीं था ....

शाम के 7 बजे के बाद वहां इंसान कम ही नजर आते थे और अब तो लगभग आधी रात हो चुकी थी ....

मैं डोम की कुटिया में वापस पहुंच गया । आसन उसी तरह लगा हुआ था लेकिन अभी खाली था । कुछ देर इंतजार करने के बाद मैं चारपाई पर लेट गया ।

मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है ?
इसी उहापोह में लेटे लेटे लगभग एक घंटा गुजर गया ।

मैंने हाथ को टटोला...
घड़ी मौजूद थी...
समय देखा...

रात के 2:00 बजे थे....

नींद आंखों से दूर थी .....

मैं अपने उलझे हुए दिमाग के साथ संभावनाओं की तलाश करता हुआ बैठा था |

जिन घटनाओं का मैं साक्षी हो रहा था वह अजीब थी !

अद्भुत थी !

साथ ही डरावनी भी ।

तभी !!!

वहीं नीली रोशनी फिर से उसे झोपड़ी में प्रकट हुई !
मैंने फिर से प्रणाम की मुद्रा में सर झुकाया ! मेरे सवाल

पूछने से पहले ही नीली रोशनी में उपस्थित मानव आकृति ने कड़े शब्दों में निर्देश दिया - यहीं रहो । जल्दी जवाब मिल जाएगा ।

और वह आकृति फिर से गायब हो गई ....

मेरे लिए यह जितना अदभुत था ! उतना ही रहस्यमय और अजीब भी । क्योंकि मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था ।

मैं फिर वापस चारपाई पर पसर गया और आंख बंद करके सोने की कोशिश करने लगा । लेकिन नींद आंख से कोसों दूर थी और नींद तक पहुंचने के मेरे सारे प्रयास विफल हो गए ।

चारपाई पर करवट बदलते बदलते 3 बज गए ! लेकिन नींद नहीं आई । लगभग 4 बजे मेरी आंखें हल्की सी झपकी । मैं वापस नींद के आगोश में चला गया ।

मेरी समझ में आ गया यह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं । यह अवश्य कोई अघोर साधक है .....

गुरुध्यान के बाद निखिल पंचक का उच्चारण सुनकर मैं समझ गया किया कि यह मेरे अग्रज गुरु भाई हैं । मैंने मन ही मन उनको प्रणाम किया । हाथ जोड़कर बिस्तर से नीचे उतर जमीन पर बैठ गया । डोम ने मेरी ओर देखे बिना 15 मिनट में पूजा संपन्न की ।

उस कमरे में कोई पूजन सामग्री नहीं थी । गुरु पूजन संपन्न होने के साथ पूरा कमरा गुलाब के फूलों की खुशबू से महक उठा । ऐसा लगा जैसे हजारों गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां वहां बिखेर दी गई हो ।

जो साधक हैं वे जानते होंगे कि जब मानसिक रुप से गुरु पूजन पूरी श्रद्धा के साथ किया जाता है तो जिन जिन सामग्रियों का मानसिक अर्पण होता है उनका प्रभाव पूजन स्थल पर दिखाई देता है । यदि मानसिक रुप से गुलाब का पुष्प अर्पित किया गया हो तो गुलाब के पुष्प की खुशबू वहां बैठे सारे लोग महसूस कर सकते हैं । यदि रजनीगंधा का पुष्प अर्पित किया गया हो

मेरी समझ में आ गया यह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं । यह अवश्य कोई अघोर साधक है .....

गुरुध्यान के बाद निखिल पंचक का उच्चारण सुनकर मैं समझ गया किया कि यह मेरे अग्रज गुरु भाई हैं । मैंने मन ही मन उनको प्रणाम किया । हाथ जोड़कर बिस्तर से नीचे उतर जमीन पर बैठ गया । डोम ने मेरी ओर देखे बिना 15 मिनट में पूजा संपन्न की ।

उस कमरे में कोई पूजन सामग्री नहीं थी । गुरु पूजन संपन्न होने के साथ पूरा कमरा गुलाब के फूलों की खुशबू से महक उठा । ऐसा लगा जैसे हजारों गुलाब के फूलों की पंखुड़ियां वहां बिखेर दी गई हो ।

जो साधक हैं वे जानते होंगे कि जब मानसिक रुप से गुरु पूजन पूरी श्रद्धा के साथ किया जाता है तो जिन जिन सामग्रियों का मानसिक अर्पण होता है उनका प्रभाव पूजन स्थल पर दिखाई देता है । यदि मानसिक रुप से गुलाब का पुष्प अर्पित किया गया हो तो गुलाब के पुष्प की खुशबू वहां बैठे सारे लोग महसूस कर सकते हैं । यदि रजनीगंधा का पुष्प अर्पित किया गया हो

तो रजनीगंधा के फूलों की महक पूजा स्थल में स्पष्ट महसूस होती है । इस बात का अनुभव मैंने भी किया था क्योंकि जब भी गुरु पूर्णिमा के अवसर पर अपनी क्षमता अनुसार गुरु का पूजन करता था तो गुरुदेव अपनी उपस्थिति का इस प्रकार की खुशबू के रूप में एहसास अवश्य कराते थे ।

पूजा समाप्त करके डोम उठ खड़ा हुआ । मैं हाथ जोड़कर खड़ा था । उसने अभय की मुद्रा में हाथ उठाया और कहा , अब समय आ गया है । विश्राम कर लो । आज शाम से साधना प्रारंभ होगी । उसके बाद आराम का अवसर तुमको कम ही मिलेगा .....मैं जाता हूं ! अपनी जिम्मेदारियां निभा कर वापस लौटता हूं !

दो शव आएंगे आज!! उन्हीं में से एक तुम्हारी साधना का निमित्त भी बनेगा !!.....

इंतजार के और उत्तेजना के साथ में आने वाले क्षणों की प्रतीक्षा कर रहा था .....

समय काटे नहीं कट रहा था .....

ऐसा लग रहा था कि सूरज को अपने हाथों से पकड़ कर अस्ताचल की ओर ढकेल दूँ .....

ताकि साधना का समय जल्दी से करीब आ जाए....

लेकिन यह केवल कपोल कल्पना थी क्योंकि ऐसा होना तो संभव नहीं था । इंतजार का वक्त बहुत लंबा गुजरा । ऐसा लगा जैसे एक जन्म की प्रतीक्षा हुई हो ।

उस दिन उस श्मशान में आए 2 शवों में से एक बुजुर्ग व्यक्ति का था और एक शव सर्प दंश से मरे हुए एक युवा व्यक्ति का था । जिसकी आयु करीब 30 वर्ष रही होगी । परंपरा के अनुसार बुजुर्ग व्यक्ति का दाह संस्कार किया गया और सर्पदंश वाले युवक को मसान के दूरस्थ कोने में दफना दिया गया ।

परिजन धीरे धीरे कर के वापस लौटने लगे.....

श्मशान में सन्नाटा छा गया.....

जलती हुई चिताओं की अंगारों की चमक धीरे-धीरे धीमी पड़ने लगी और उसके साथ साथ श्मशान में

अंधेरा बढ़ने लगा । ऐसा लग रहा था जैसे कालिमा मसान को अपने आगोश में धीरे-धीरे समेटती जा रही है । लगभग 9 बजे का समय रहा होगा तभी डोम वापस कक्ष में उपस्थित हुआ ।

आते ही उसने मुझे निर्वस्त्र होकर नदी में स्नान करके आने का निर्देश दिया । मैं यंत्रवत चारपाई से उठकर सारे वस्त्र उतारकर नदी की ओर चला गया । जब स्नान करके लौटा तो मैंने देखा की ताजी भस्म एक पात्र में रखी हुई है । संभवत: उसी वृद्ध की चिता भस्म होगी । उसमें से हल्का हल्का धुँआ निकल रहा था ।

उसने भस्म शरीर पर मलने का निर्देश दिया और मैं भस्म पात्र से लेकर अपने नग्न शरीर पर मलने लगा ।

धीर गंभीर स्वर में डोम ने महाकाली की स्तुति उच्चरित करनी प्रारंभ की .....

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम् ।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां
मुण्डमाला विभूषिताम् ॥

सद्यः छिन्नशिरः खड्गवामाधोर्ध्व कराम्बुजाम् ।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणोर्ध्वाधः पाणिकाम् ॥

महामेघ प्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम् ।
कण्ठावसक्तमुण्डाली गलद्रुधिर चर्चिताम् ॥

कर्णावतंसतानीत शवयुग्म भयानकां ।
घोरदंष्ट्रां करालास्यां पीनोन्नत पयोधराम् ॥

शवानां कर संघातैः कृतकाञ्ची हसन्मुखीम् ।
सृक्कद्वयगलद् रक्तधारां विस्फुरिताननाम् ॥

घोरावां महारौद्रीं श्मशानालय वासिनीम् ।
बालर्क मण्डलाकार लोचन त्रितयान्विताम् ॥

दन्तुरां दक्षिण व्यापि मुक्तालम्बिकचोच्चयाम् ।
शवरूप महादेव ह्रदयोपरि संस्थिताम् ॥

शिवाभिर्घोर रावाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम् ।
महाकालेन च समं विपरीत रतातुराम् ॥
सुक प्रसन्नावदनां स्मेरानन सरोरुहाम् ।

एवं सञ्चियन्तयेत् काली सर्वकाम समृद्धिदां ॥

मैं मंत्रमुग्ध सा खड़ा हुआ डोम के विशुद्ध स्तोत्र उच्चारण को सुन रहा था ।

जिसे मैं एक सामान्य डोम समझ रहा था वह कितनी उच्च कोटि की साधना में लीन मेरा अग्रज गुरु भाई है , यह सोचकर मन प्रफुल्लित भी हो रहा था । मन में यह खेद भी था कि मैं उसे पहचान भी नहीं पाया | जब मैं यह सोच रहा था तभी उसकी करुणामई आंखें मेरी और उठी !

ऐसा लगा जैसे उसने आश्वस्त किया हो गृहस्थ में ऐसा होना स्वाभाविक है .....

जैसे ही उसने ध्यान की पंक्तियां पूर्ण की!

मैंने अपने शरीर पर भस्म का लेपन पूरा कर लिया!

तभी !!!!

कोने में रखा हुआ दीपक भभककर जलने लगा !!!!

उसकी लौ धीरे-धीरे बढ़ने लगी और लगभग 1 फुट ऊंची हो गई ।

किसी भी बत्ती की लौ, 2 इंच 3 इंच तक उठ सकती है मगर एक फुट लंबी को लौ मैंने अपने जीवन में पहली बार देखा था ।

उस लौ के बीच में एक अत्यंत ही सुंदर मुख स्पष्ट हुआ |

हम दोनों ने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया । आशीर्वाद भरे हुए नेत्रों के साथ वह आकृति वापस विलुप्त हो गई । दीपक की लौ वापस सामान्य स्थिति में आ गई...

डोम की आंखें आंसुओं से भरी हुई थी | उसने दीपक को प्रणाम किया मेरी ओर देखा और कहा - मां प्रसन्न है! चल ! तेरा कार्य सिद्ध होगा !

हम दोनों शमशान के उस कोने की ओर बढ़ चले जहां उस युवक को दफनाया गया था । मुझे आभास हो गया कि उस युवक के शव को निकाल कर उसी पर साधना करनी है । लेकिन न उनके हाथ में कोई हथियार था | न ही कुदाली जैसी कोई चीज जिससे उसे खोदा जा सके

| ना ही उसने मुझे कुछ रखने के लिए कहा था । उसके पास था तो बस बांस का एक लट्ठा | जिसे वह बेहद लापरवाह अंदाज में अपने हाथों में घुमाता हुआ आगे बढ़ रहा था ।

बाबा के पीछे पीछे विश्वास अविश्वास सकारात्मक नकारात्मक विचारों के साथ मैं भी चल रहा था ....

किताबों में शव साधना के विषय में पढा जरूर था लेकिन व्यावहारिक रूप से अनुभव करने का यह मेरा पहला अवसर था । पहले ही अवसर में एक सामान्य ग्रहस्थ व्यक्ति के लिए शव साधना में संलग्न होना कितनी मुश्किल और भयावह स्थिति होगी उसकी आप केवल कल्पना कर सकते हैं .....

मेरे प्राण हलक की ओर आ रहे थे ।
आत्मा थरथरा रही थी ।
पैर डर से कांप रहे थे ।
लेकिन ! मेरे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था क्योंकि मुझे उसके पीछे जाना ही था.....

मैं उसी प्रकार ड़री हुई अवस्था में उसके पीछे पीछे चलता गया .....

दफन किए गए स्थान पर पहुंचते ही बाबा ने डंडे को हवा में उछाल दिया । डंडा जैसे हवा में उछाला वह आसमान में जाकर हवा में लटका ,,,,
उसने बेहद गंभीर शब्दों में डंडे को निर्देश दिया.....जल्दी से अपना काम करो | जैसे कोई वॉइस ऑपरेटेड मशीन हो वह डंडा तेजी से जमीन की ओर गया और देखते ही देखते जितना इलाका उस शव को दफनाने के लिए लगा होगा, उसे किसी केक के टुकड़े की तरह उसने काट दिया ।

वह कटा हुआ पूरा का पूरा हिस्सा जमीन से ऊपर आने लगा .....

जमीन के ऊपर आते हुए उस मिट्टी के हिस्से के साथ सबसे नीचे दफनाए गए युवक का शव भी था .....

जमीन से थोड़ा ऊपर आने के बाद धड़ाम से गड्ढे के बाजू वाली जगह वह शव जा गिरा और डंडे ने मट्टी वापस गड्ढे

में डाल दिया। उस जगह को देखकर ऐसा लगता ही नहीं था कि यहां खुदाई की गई हो और शव अंदर से बाहर निकाल लिया गया हो ।

शव के नीचे गिरते ही बाबा का स्वर फिर गूँजा - "**यहां नहीं ... नदी में स्नान कराकर स्थान पर पहुंचा.....**"

किसी आज्ञाकारी सेवक की तरह वह डंडा नीचे की ओर आया और उस शरीर से जाकर चिपक गया । शरीर को अपने साथ चिपका कर नदी की और तीव्र गति से गया ।

थोड़ी देर के बाद हम वापस झोपड़ी में आ गए थे । जब तक हम वहां पहुंचे डंडा अपना काम कर चुका था | उसने शव को स्नान करा दिया था और वह शव उनके कक्ष में पड़ा हुआ था । युवक की देह सर्पदंश के कारण पूरी नीली पड़ गई थी और उस अंधेरे में ऐसा लग रहा था जैसे कोयले से बना हुआ शरीर हो । दीपक की हल्की रोशनी में वह दृश्य बेहद डरावना था .....

बाबा ने फिर डंडे को कुछ आदेश दिया | डंडा फिर सनसनाता हुआ झोपड़ी से बाहर निकल गया । कुछ क्षण में एक झोले के साथ वापस लौटा | उस झोले में सिंदूर की पुड़िया और मास के कुछ टुकड़े थे और साथ ही मदिरा की दो बोतलें भी थी ।

झोपड़ी में सुबह वाली बोतल अभी भी पड़ी हुई थी । उस बोतल को डोम ने मेरी और बढ़ाया । मैं एक पल को झिझका, बाबा की चमकती हुई आंखें मेरी आंखों से टकराई । मुझे ऐसा लगा कि जो हो रहा है उसे होने दो । मैंने बोतल मुंह से लगा ली और गटागट पी गया । इस बार का स्वाद और भी अजीब था | उस द्रव्य में से अष्टगंध जैसी खुशबू आ रही थी और पीने पर शहद में गुलकंद मिले हुए शरबत जैसा स्वाद था | पूरी बोतल खाली करने के बाद मैंने जमीन पर रख दी ।

मेरी हरकत पर बाबा हल्के से मुस्कुराया और बोला - अब तू गुरुवर को याद कर और आज की साधना प्रारंभ कर । मैं इस शव को तैयार कर रहा हूं | आज तुझे शव साधना करनी है | इस साधना के बाद तू तंत्र के क्षेत्र में प्रवेश करेगा और तुझे एक नया नाम मिलेगा ।

मैं हाथ जोड़कर सब सुन रहा था अब मेरा डर गायब हो चुका था , उसकी जगह उत्साह और वीर भाव ने ले ली थी ।

बाबा ने साधना का विधि विधान बताया साथ ही यह भी बताया - ऐसी वीर देह का मिलना सौभाग्य की बात होती है | विरले अघोर साधकों को इस प्रकार की देह प्राप्त होती है |

उन्होंने कहा - आज की साधना शमशान भैरव की साधना है | इस साधना से शमशान के अधिष्ठाता प्रसन्न होते हैं और आगे की साधना ओं का मार्ग प्रशस्त होता है |

उन्होंने मुर्दे के ऊपर सिंदूर से तिलक लगाना प्रारंभ किया | एक सौ आठ जगहों पर उन्होंने तिलक किया | इसके बाद उन्होंने त्रिकोणात्मक यंत्र बनाया | यंत्र निर्माण के बाद उन्होंने सिंदूर की पुड़िया मुझे दी |

मेरी प्रश्नवाचक निगाहों के जवाब में उन्होंने कहा - तुझे उसके वक्ष पर बैठकर साधना करनी है | इस त्रिकोण

यंत्र के मध्य में बिंदी लगाते ही यह शव शक्ति युक्त होकर शिव हो जाएगा | इस मुर्दे में प्राण आ जाएंगे ।

मेरे लिए यह बेहद अकल्पनीय सी बात थी , लेकिन जो मेरे सामने घटित हो रहा था वह भी कल्पना की अंतिम सीमा से परे था | इसलिए जो भी बाबा कह रहा था उसे मैं सत्य ही मान रहा था ।

बोतल के द्रव्य का प्रभाव था या कुछ और यह मैं कह नहीं सकता | लेकिन उसके आदेश का पालन करने के लिए मैं सहज ही तत्पर हो गया | आज जब उस क्षण को याद करता हूं तो झुर झुरी आ जाती है । उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और मेरे माथे पर सिंदूर का तिलक किया | सिंदूर का तिलक लगते ही मुझे अपने माथे पर तेज जलन का एहसास हुआ | ऐसा लगा जैसे उनका अंगूठा किसी आग के गोले में तब्दील हो गया था और उसकी सारी ऊष्मा मेरे मस्तक में समा रही थी .....

उन क्षणों में मैं अपने पूर्व जन्म के दृश्य देख पा रहा था और देख रहा था की महा श्मशान में मैं गुरुवर के साथ

इसके बाद दो वाक्य में उन्होंने अपनी बात समाप्त की - जब यह उठेगा तब भोग मांगेगा । उस समय यह तेरे काम आएगा .....

मैंने पूछा - मैं यह कैसे कर पाऊंगा ?

बाबा के चेहरे पर एक निश्छल मुस्कुराहट तैर गई । उन्होंने कहा - तू शुरु तो कर | तू समझ जाएगा कि तू सब कुछ जानता है ।
इतना कहकर झोपड़ी से बाहर निकल गए ।

उनके जाते ही मेरे मुख से अचानक मन्त्रोच्चारण आरंभ हो गया ।

कट कट प्रचट प्रचट शमशान भैरव....

मेरा स्वर धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था .....

मेरा शरीर क्रोध से थरथराने लगा और मंत्रोच्चार की तीव्रता भी उसी के साथ बढ़ने लगी.....

ऐसा लग रहा था जैसे पूरी झोपड़ी मेरे मंत्रोच्चार से हिल रही हो .....

आधे घंटे तक उसी प्रकार मंत्रों के उच्चारण के बाद मैंने सिंदूर की पुड़िया में से सिंदूर निकाला और त्रिकोण के मध्य में बिंदु बना दिया |

बिंदु के लगते ही शव का मुह खुल गया और जिह्वा बाहर लपक आयी ।

मेरा मंत्र जाप जारी था .....

बिंदु लगने के बाद शव हिलने लगा । शव के हिलने के साथ मेरी आवाज भी बुलंद होती चली गई |

दस मिनट के अंदर शव बुरी तरह से हिलने लगा .....
मुझे ऐसा लगा कि मैं उसके ऊपर से गिर जाऊंगा |
लेकिन कसकर बैठा रहा .....

तभी !

उस मुर्दे की आंख अचानक खुली !
और .....

जैसे ही उसकी आंख खुली वह भयानक आवाज में बोला.... तूने मुझे बुला कर अच्छा नहीं किया । आज तेरा आखरी दिन है ।

इतना सुनकर एक पल को मेरी रूह कांप गई, लेकिन अंदर से किसी मार्गदर्शन की तरह संकेत मिला और मैंने दारू की बोतल उसके मुंह में डाल दी । पूरी की पूरी बोतल खाली हो गई ! उसने तृप्ति भरी डकार मारी और शांत हो गया |

मैंने राहत की सांस ली कि बला टली.....

तभी ! अचानक एक भयानक आवाज के साथ जमीन फट गई ! उस फटी हुई जमीन के अंदर से एक काले रंग की आकृति प्रकट हुई | आकृति एक स्त्री की थी । बिखरे हुए बाल ! लाल-लाल आंखें ! लप-लप करती हुई जीभ !

शरीर में मांस कहीं नजर ही नहीं आ रहा था.....

ऐसा लग रहा था हड्डियों के ऊपर चमड़ी लगा दी गई हो.....।

रात के अंधेरे में उसकी काली छवि और भयानक दिखाई दे रही थी .....

उसके एक हाथ में ताजा कटा हुआ सिर था जिसमें से खून बह रहा था .....

पूरा कमरा जलते हुए मांस की बदबू से भर गया । जलते हुए बाल और मांस के जलने से शमशान में जिस प्रकार की गंध फैली रहती है वहीं तीव्र गंध पूरे कमरे में फैल गई .....

उस आकृति की लंबाई धीरे-धीरे बढ़ने लगी | जो लगभग 8 फुट तक पहुंच गई । वह शव के सिर के ठीक पास में आकर बैठ गई और मुझे घूर घूर कर देखने लगी । उसकी भयानक दृष्टि देखकर मेरी आत्मा तक कांप गई ।

मैंने गुरुवर को याद किया ! मन ही मन गुरु मंत्र का जाप किया और फिर से भैरव मंत्र का जोर जोर से जप करने लगा । डर के मारे मैंने अपनी आंखें भी बंद कर ली थी |

रात के अंधेरे में उसकी काली छवि और भयानक दिखाई दे रही थी .....

उसके एक हाथ में ताजा कटा हुआ सिर था जिसमें से खून बह रहा था .....

पूरा कमरा जलते हुए मांस की बदबू से भर गया । जलते हुए बाल और मांस के जलने से शमशान में जिस प्रकार की गंध फैली रहती है वहीं तीव्र गंध पूरे कमरे में फैल गई .....

उस आकृति की लंबाई धीरे-धीरे बढ़ने लगी | जो लगभग 8 फुट तक पहुंच गई । वह शव के सिर के ठीक पास में आकर बैठ गई और मुझे घूर घूर कर देखने लगी । उसकी भयानक दृष्टि देखकर मेरी आत्मा तक कांप गई ।

मैंने गुरुवर को याद किया ! मन ही मन गुरु मंत्र का जाप किया और फिर से भैरव मंत्र का जोर जोर से जप करने लगा । डर के मारे मैंने अपनी आंखें भी बंद कर ली थी |

लगभग 10 मिनट बाद मैंने फिर आंखें खोली ..... वह उसी मुद्रा में सामने बैठकर उस नरमुंड से टपकते हुए खून को चाट रही थी ।

मैंने फिर आंख बंद कर ली और जोर जोर से मंत्र जाप करने लगा |

पाँच मिनट का समय और गुजरा ।
मैंने धीरे से आंखें खुली तो पूरा दृश्य बदला हुआ था !

सामने एक अप्रतिम सुंदरी बैठी हुई थी ! जो पूरी तरह से नग्न थी ! ऐसी सौंदर्य की स्वामिनी मैंने अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी !

वह मुझे अपनी और आने के लिए निमंत्रण देती हुई दिख रही थी !

एक क्षण के लिए वासना का ज्वार मेरे अंदर फूट पड़ा, लेकिन दूसरे ही क्षण जैसे अंदर से किसी ने चेताया हो ! मैं वापस शांत हो गया !

पुनः गुरु मंत्र का उच्चारण किया और वापस आंखें बंद करके भैरव मंत्र के उच्चारण में लग गया !

कुछ समय बाद मुझे ऐसा लगा जैसे शव में कुछ हलचल हुई |

मैंने डरते डरते आंखें खोली तो वह सुंदरी शव के ऊपर ठीक मेरे सामने ही बैठी हुई थी ....

वही मादक शरीर और निमंत्रण देती हुई कटाक्ष करती हुई आंखें ....

चमेली के इतर की मन भरमाने वाली खुशबू पूरे कमरे में फैली हुई थी ।

मन अनियंत्रित होने लगा देह पर नियंत्रण छूटता प्रतीत हुआ !

इच्छा हुई कि उसे अपने आगोश में ले लूँ !

लेकिन तभी दोनों नेत्रों के बीच एक स्पंदन सा प्रतीत हुआ ।

कान में धीमी गुरु गंभीर ध्वनि गूंजी - लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित कर ! बाधाओं में साधना को बर्बाद मत कर !

गुरुवर का यह चेतावनी भरा स्वर मेरे दिमाग को ठिकाने लगाने के लिए पर्याप्त था । मैं वापस मंत्र जाप में लग गया | अब मेरी आंखें भी खुली थी और मंत्र जाप भी चालू था | वह सुंदरी साक्षात मेरे सामने पूर्ण नग्न अवस्था में बैठकर मेरा परीक्षण ले रही थी ।

उच्च कोटि की साधनों में विघ्न डालने के लिए इस प्रकार की परीक्षाएं अनंत काल से होती आ रही है । जैसे ऋषियों की तपस्या को भंग करने के लिए इंद्र अपनी अप्सराओं को भेजते थे । शायद यह दुनिया की सबसे जटिल परीक्षा होगी और गुरुवर के आशीर्वाद से मैं अपने ऊपर संयम रख पाया ।

यह स्थिति लगभग 15 मिनट रही होगी उसके बाद युवती की आंखें शांत होती चली गई । वह वापस अपने कालिका स्वरूप में आ गई | अब उन आंखों में वात्सल्य नजर आने लगा । अपने हाथ में रखा वह नरमुंड उसने

शव के दाहिनी तरफ रख दिया, मेरे सिर पर हाथ फिराया और विलुप्त हो गई ।

मैंने राहत की सांस ली और पुनः मंत्र जाप में लग गया ।

पूरा कमरा मेरे मंत्र जाप से गूंज रहा था !

बाहर बारिश हो रही थी !

बेमौसम की बारिश !

बिजली भयानक ढंग से कड़क रही थी !

मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे आसमानी बिजली झोपड़ी के चारों तरफ गिर रही हो .....

भयानक आवाज के साथ रोशनी का गोला उठता हुआ प्रतीत होता था और मैं बड़ी मुश्किल से अपने आप को संभालता हूआ बैठा था । अचानक वह शव झोपड़ी की छत तोड़ता हुआ आसमान की ओर चला गया | मैंने बड़ी मुश्किल से अपना संतुलन बनाया और उस पर बैठा रह सका ! लगभग 100 फुट की ऊंचाई तक चला होगा | उसके बाद फिर वापस धम से जमीन पर उसी

घेरे में आ गिरा । नीचे गिरते ही ऐसा लगा जैसे उसकी आंखें अपने गड्ढों से बाहर निकल जाएंगे और उसकी जीभ बाहर लप-लप कर रही थी ।

बेहद डरावना दृश्य था | मैंने किसी अदृश्य निर्देश का पालन करते हुए मांस के टुकड़े उसके मुख में समर्पित किए | उसकी लपलप करती जीभ ने उन टुकड़ों को स्वीकार करते हुए ग्रहण कर लिया ।

मेरा मंत्र जाप निरंतर जारी था अब शव के मुख से आवाज निकली **बोल तुझे क्या चाहिए**....

मैंने प्रणाम की मुद्रा में सिर झुकाया और कहा कि प्रभु आपका आशीर्वाद और सानिध्य चाहता हूं |

शव का हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में उठा और वह शव शांत हो गया । मेरा जाप जारी था .....क्योंकि बाबा ने सारी रात मन्त्र जाप का आदेश दिया था |

कुछ समय और गुजरा ! मेरे सामने काले रंग का धुआँ फैलने लगा । धीरे धीरे धुँआ एक आकृति में बदलने

लगा । एक भयानक पुरुष आकृति सामने प्रकट होने लगी । जिसका केवल विशाल मुख दिखाई दे रहा था बाकी अस्पष्ट सा था । मुझे आभास हुआ कि यह अवश्य शमशान के अधिष्ठाता शमशान भैरव का प्राकट्य है , और मेरे होठों से भैरव की स्तुति स्वत: निकल पड़ी.....

तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपमम.....

आकृति के स्पष्ट होते होते तेज हवाएं चलने लगी और घास फूस से बना हुआ वह झोपड़ा पूरी तरह से उखड़ कर हवा में विलीन हो गया । ऐसा लग रहा था जैसे वहां कभी कोई झोपड़ा था ही नहीं ....ऐसा लग रहा था जैसे भयानक तूफान आ गया हो । लगभग 2 मिनट तक तूफान चलता रहा । आस पास के 3 - 4 पेड़ उखड़कर जमीन पर गिर पड़े .....

कुछ समय बाद मेरी अचंभित स्थिति समाप्त हुई.....

मैं दंडवत मुद्रा में उस आकृति के सामने गिर पड़ा ..... धीरे धीरे वायु का वेग शांत होता चला गया ।

आकाश से बिजली कड़कने जैसी आवाज के साथ आशीर्वाद उनके श्रीमुख से निकला | वह आकृति विलुप्त हुई और वह धुंआ मेरे चारों ओर घिरने लगा |

मुझे ऐसा लगने लगा जैसे वह धुँआ मेरे अस्तित्व को समाप्त कर मुझे अपने अन्दर समाहित कर लेगा ..... फिर शायद ....मैं शव के ऊपर ही गिर पड़ा और लगभग बेहोश हो गया ।

जब मेरी आंखें खुली और ऊपर देखा तो बाबा सामने खडे थे । मैं उनके चरणों में लिपट गया उन्होंने मुझे स्नेह से उठाकर गले लगाया और कहा बेटा तू सफल हुआ ...

अब गुरुदेव तुझे अघोर दीक्षा प्रदान करेंगे ,.....

झोपड़ी तो अब पूरी उखड़ चुकी थी । अंधेरा छाया हुआ था अघोरी मुझे और उस दिव्य शक्ति के द्वारा रखे गए नर मुंड को लेकर श्मशान में स्थित काली मंदिर की ओर

बढ़ गया | जाते जाते वह डंडे को आदेश दे गया | डंडा शव को वापस उसके स्थान पर पहुंचाने के लिए चल पड़ा और हम दोनों काली मंदिर पहुंच गए ।

काली मंदिर के गर्भ ग्रह का दरवाजा शाम को पुजारी ताला बंद कर के चला जाता था | हम लोग गर्भ गृह के दरवाजे पर पहुंचे | ताला लटका हुआ था | बाबा ने मन ही मन कुछ बुदबूदाया और ताला अपने आप खुलकर लटक गया | उन्होंने दरवाजा खोला और हम दोनों गर्भ ग्रह के अंदर पहुंच गए | दरवाजा अपने आप बंद हो गया ।

आज महाकाली की मूर्ति एक अलग ही तेजस्विता से भरी लग रही थी ! ऐसा लग रहा था जैसे उसमे प्राण आ गए थे आँखें जागृत हो चली थी ....

सुबह लगभग 4:30 बजे का समय रहा होगा | बाबा के श्री मुख से गुरु स्तुति प्रारंभ हुई और उसके समाप्त होते-होते गर्भ ग्रह प्रकाश से जगमगा गया | गुरुवर सूक्ष्म रूप में आ चुके थे | हम दोनों ने साष्टांग दंडवत प्रणाम किया

उन्होंने मुस्कुरा कर आशीर्वाद दिया और कहा “आज तुझे अघोर दीक्षा प्रदान की जाएगी” ।

मुझे बाबा ने चौकी पर बैठाया वह नरमुंड भी मेरी बगल में रखा हुआ था । चौकी पर बैठने के बाद बाबा ने वह मुंड मेरे सर पर रख लिया और उसे पकड़ कर खड़े हो गए ।

गुरुदेव के मुख से अघोरेश्वर महादेव की स्तुति प्रारंभ हुई ।

मैं आंखें बंद करके बैठा हुआ था मेरे आज्ञा चक्र में तेज प्रकाश फैलने लगा । उस प्रकाश के मध्य में अघोरेश्वर महादेव साक्षात अपनी शक्ति के साथ विराजमान दिख रहे थे, और मेरी आंखों से आंसुओं की अविरल धारा बहने लगी । कुछ क्षण के बाद बाद प्रभु का बिंब विलुप्त हो गया | मैंने हड़बड़ा कर आंखें खोली तो सामने गुरुवर और बाबा को पाया |

नरमुंड अभी भी मेरे सर पर रखा हुआ था | गुरु मुख से लगातार मंत्रों का उच्चारण हो रहा था और उसके साथ

साथ मेरे सर पर रखा हुआ नरमुंड धीरे धीरे मेरे खोपड़ी के अंदर समाता जा रहा था । लगभग 10 मिनट के समय में वह नरमुंड पूरी तरह से मेरे खोपड़ी में समा गया । जैसे ही वह नरमुंड मेरे खोपड़ी में समाया मुझे तेज बिजली के झटके जैसा एहसास हुआ |

मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा पूरा शरीर फूल जैसा हल्का हो गया है |

मेरा वायव्य शरीर निकल कर गुरुदेव के चरणों में दंडवत पड़ा हुआ है | गुरुदेव के श्री मुख से गहन गंभीर स्वर में आशीर्वाद उच्चरित होने लगा । उन्होंने मुझे उठाकर अपने सीने से लगा लिया और कहा बेटा तूने सबसे बड़ी परीक्षा पार कर ली है !

मैं तुझसे बेहद प्रसन्न हूं !

मेरा आशीर्वाद सदा तेरे साथ रहेगा ....

आज से तेरा नाम अघोरानंद होगा ।

उस दिन के बाद तंत्र जगत में मेरी यात्रा प्रारंभ हुई .....

जिसमें कई पड़ाव आए.....

कई रहस्यमई घटनाएं घटीं ....

जिनको समझना भी मुश्किल है और समझाना भी.....

.....समाप्त

अनिल शेखर "अमस"

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।
2. अघोरानंद की अप्सरा ।
3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।
4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।
5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।
6. अघोरानंद और छाया की माया ।
7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।
8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।
9. परेतिन की शादी ।